

पद - 03

हमारै दारि दारिल की लकरी ।

मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह कृक करि पकरी ।

जागत जीवत स्वप्न विवस-निसि, कावह-कावह जकरी ।

सुगत जोग लागत है ऐसी, ज्यों कसई ककरी ।

तु में व्याधि हमको ली आरु, देखी सुनी न करी ।

प्रसंग : प्रस्तुत पद के माध्यम से गोपियाँ श्री कृष्ण के प्रति अपनी सच्ची प्रेम की प्रकट कर रही हैं साथ ही योग के संदेश के प्रति अपनी भावनाओं की भी दर्शा रही हैं।

भावार्थ : गोपियाँ उद्धवजी से कह रही हैं कि हमारे कृष्ण दारिल पक्षी की तरह हैं। गोपियाँ श्री कृष्ण की अपनी हृदय में इस प्रकार बसा रखी हैं, जो उनसे अलग नहीं हो सकती। योग के प्रति गोपियों के मन में धृणा है। वे उद्धवजी से योग का संदेश दे उठे देने की कहती हैं, जिनका मन-चंचल हो। वे उद्धवजी की बता रही हैं कि हमारा मन पहले से ही श्री कृष्ण में बसा हुआ है।

पद - 04

दारी हैं राजनीति पढ़ि आर।  
समुझी बात कहत मधुकर के, समान्यार सब वार।  
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अब गुरु ग्रंथ पठार।  
बड़ी बुद्धि जानी जो उनकी, योग-संदेश पठार।.....  
ते क्यों अनीति करें आपुन, जो और अनीति छुड़ार।  
राज धर्म तो यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सतार।

प्रसंग : प्रस्तुत पद के माध्यम से गोपियों श्री कृष्ण के राजनीति की आलोचना करते हुए राजधर्म की बातें बता रही हैं।  
३५

भावार्थ : सूरदास गोपियों के माध्यम से कह रहे हैं कि श्री कृष्ण ने राजनीति का पाठ पढ़ लिया है। उद्भव जिसे यहाँ भँवरा कहकर दर्शाया गया है, वह तो पहले से ही चालाक है, परंतु श्री कृष्ण के राजनीति का पाठ पढ़ाने से अब वह और भी चतुर हो गया है और हमें अपने छल-कपट के साथ श्री कृष्ण का योग संदेश दे रहा है।

गोपियों के अनुसार राजा का परम कर्तव्य यही होता है कि वे अपनी प्रजा का अहित न करें, हमेशा उनकी भलाई करें।

## प्रश्नोत्तर

1. 'हारिल की लकड़ी' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: मैं यहाँ गौपियों यह बताना चाहती हूँ कि जिस प्रकार हारिल वृक्ष के लिए लकड़ी उसके जिन का सहारा बन जाता है, ठीक उसी प्रकार श्री कृष्ण गौपियों के लिए जिन का सहारा है।

2. सुनत योग लागत है ऐसी, ज्यों करुई ककरी - आशय स्पष्ट करें।

उत्तर - इस वाक्य के माध्यम से गौपियाँ यह कहना चाहती हैं कि कृष्ण का संदेश कड़वी ककड़ी के समान लगता है, निगुण ब्रह्म की बातें उन्हें अच्छी नहीं लगती।

3. गौपियों के अनुसार राजधर्म क्या होता है?

उत्तर - राजा का धर्म यही होता है कि वे प्रजा की कभी सहाय नहीं। हमेशा प्रजा की भलाई करें।